

सहेतु ॥ सरवसकलगत्यमोक्षकेशेतु ॥ १२ ॥ इ
 तीश्रीभक्तीज्ञाननुपदभ्रंगसमासेः ॥ ॥
 श्रीसाहेबकुवेरमाहाराजनोगंथमाहाम
 णीबोधपरमपुरषप्रदीपमानदेषावंन ॥ धृत
 पंचस्वामीनारायणवीधवंशकोग्रंथलीष्य
 ते ॥ दोहा ॥ स्वामीनारण्यनीजनारण्य ॥ सुनीता
 यन्ननुसार ॥ महीपतयांशोरुपगरयां ॥ एतना
 वीचफेरफार ॥ १ ॥ महीपतयांतीजनारण्य
 स्वामीनारण्यपतिषांन ॥ छोट्यलगाईबुंलकु
 जुगउनकाज्ञांन ॥ २ ॥ नारीशोरुनांणातणो
 जगदेवनवैराग ॥ ईछन्नतीअंतरगत्य ॥ एपर
 पंचीत्याग ॥ ३ ॥ उपसेडुरदुरभगी ॥ वगंनविश्व र
 अंतररीश ॥ सुडीगमाईसुडीये ॥ चरमकटाथ
 पीईस ॥ ४ ॥ जुठेजुगपरमोधीया ॥ ज्ञानदारस
 मसेर ॥ रैणीदेशगुजरातमे ॥ बीनुपरषभये
 भेरा ॥ ५ ॥ देशवाडाशोरुकागीया ॥ सोहीका
 वकीवाडा ॥ ज्ञानवेडुमालीकबीना ॥ सुनीकरी
 उजाडा ॥ ६ ॥ वाडाकावकीकागीया ॥ रायदेश
 गुजरात ॥ तसकरशोरुभीस्युतमेली ॥ कीन
 कुनबडीवात ॥ ७ ॥ तेहीतसकरतेहीभीस्युत
 सेहेजानंदकोसाथ ॥ तसकरआसनपररेह

माहा ॥ श्रीसुतज्ञान उघात ॥ १० ॥ हरीया वृक्षवीधुस
 के ॥ चुनेईटाकाः प्रोला ॥ वसेकुंडत्रीयापुरयतां
 ॥ १० ॥ देषोत्यागकेटोल ॥ ११ ॥ मंतगमतुतंनः प्राचरे
 सोस्वारथकेसाज ॥ कोईकेहेएसीकोकरे ॥ के
 हेहुकंसमाहाराज ॥ १० ॥ सतजुगत्रेहेतादापर
 वीत्येजेहीकलीसंस ॥ एसीअग्याकीनुदेही ॥
 तरुवधवणकप्रमहंस ॥ ११ ॥ सांमीसेहेजानंद
 कीकहतात्वरतीजभेवां ॥ लोचंनबीजकपा
 सके ॥ सरीरछानकेदेव ॥ १२ ॥ उतईतसाहार
 पढीभये ॥ पकरंतजीवमणीकीरादीमअनु
 भवीतीजनाभये ॥ वयावलोएहनीय ॥ १३ ॥ बी
 नुआत्मलषपक्षसंबे ॥ बंकासुतज्ञानंद ॥
 ते ॥ तातेसेहेजानंदके ॥ पंथज्ञानबीनुदंद ॥
 १४ ॥ कपटीभेषतीजनंदीक ॥ फंदीककीयोफे
 याव ॥ बाहामत्यागअंतरतके ॥ परधंत्यजो
 बगदाव ॥ १५ ॥ बुंस्तभावत्रीयातगतवा ॥ सोहीया
 गनीरवांएय ॥ अध्यातंमअस्तीतए ॥ उरधरी
 तजेअज्ञान ॥ १६ ॥ बाहुरतरीयातुछकरे ॥ दुनी
 देषावंनत्याग ॥ अंतरअध्यातंमतणी ॥ रहीक
 लेजेलाग्य ॥ १७ ॥ दंमलीयोदुनीयांगी ॥ धरी
 तंनत्यागनीसांन ॥ पधरचुनीबुरजाकीया

बाढाउनकामांत १८। तरपतीसाह्नोणाव
 दी। जेतैजुगधंनवंत। मंदीरमेहेलप्रतारीयां
 सोभीरचतप्रनंत ॥ १७ ॥ ओरमेहेलमणीरुल
 ल्यौं ॥ ओरल्यावीशेवीकार ॥ ज्ञानत्यागपंथं
 ग्यसका ॥ भूसेहुमूढगमार ॥ १८ ॥ इतमेकार
 चीपचीरहे ॥ चुनचुनमाटीकेल ॥ ज्ञानत्याग
 गत्यक्रपनकी ॥ हेसुसकलनहीसेल ॥ १९ ॥ से
 तुमकुकेसेमीले ॥ सुंदुभेषगुमार ॥ छोट्याछो
 तीकरमवहे ॥ भेडकीलाहारकतार ॥ २० ॥
 कोलीदोहीकुकरपया ॥ कहतहेसबसंसार
 तोसांमीपंथीयेकीया ॥ देषुहहरदयेवीचार
 २१ ॥ कुकरआचारजथपे ॥ चुवेप्रस्तत्रीया
 चांम ॥ कोलीजुगजीनुदोहीतल ॥ परमहंस
 दुधदांम ॥ २२ ॥ जेहीतेहीतेछलबलकरी ॥ ह
 रहीवीतसंसार ॥ आचारजकुकरपदे ॥ अर
 पावहीगमार ॥ २३ ॥ सुनकादीकसुषकयील
 दत ॥ रामआद्यप्रवतार ॥ उनकुलपीछेकीदु
 थये ॥ खुगाईसहीतआचार ॥ २४ ॥ चरमकटा
 घेरजनमीये ॥ मोचीकजीनकीजाय ॥ थपेभ
 तीजाब्राह्मण ॥ बगकीनोउतपात ॥ २५ ॥ ओ
 रमसकरामुडीया ॥ बोधीकीयेवेगार ॥ षटद

[माहा] रसंनकेनंदकी ॥ प्रभुकेभयेघुनेगार ॥ २० ॥ सं
 करलाचारजध्वज ॥ ज्ञानकवीरक्रसोण ॥ २१ ॥
 ॥ २८ ॥ साज्ञानीजीहता ॥ नंदेतोहप्रमाण ॥ २२ ॥ आ
 त्मलक्षणजानही ॥ मानहीकरमकीछोत्य ॥
 गुंजावहंनसुश्रमकरे ॥ कबहुंनहोयउदोत्य
 ३० ॥ त्योंसाधुसांमीतण ॥ अंतरगत्यअज्ञान
 उतैपैनसेरहेउज्वल ॥ गुंजावहन्यसमांत्य ॥ ३१ ॥
 ३२ ॥ परमहंसनीजनांमधर ॥ करतकर्मजीव
 कसोण ॥ ज्योंत्रांवाकेनंगकु ॥ उपररसेरसां
 ण ॥ ३३ ॥ परमहंसनीजनांमकी ॥ उनकीनी
 भवहास ॥ तोतासीमलफुलजों ॥ जगलगयी
 वीसवास ॥ ३४ ॥ तीनमासतोतापगे ॥ भगेफ
 लदेषकयास ॥ तोभजनीसांमीतण ॥ अंत
 होहुनीरास ॥ ३५ ॥ इनीडुवावंनदांनव ॥ सेहे
 जानंदअवतार ॥ जगधुताजीवमुडीया ॥ सी
 पाबीहोधकरलाहार ॥ ३६ ॥ एहीदोहमीलीर
 चिमोमल ॥ पायंडीपपंच ॥ उपचलईंदरफ
 लवत ॥ नीतरभावमलेच ॥ ३७ ॥ ज्ञानवीनाघट
 अंधके ॥ जोहोयचलणअनुप ॥ चढेकबुतरग
 गंतज्यों ॥ सुरतरहेनीजकुप ॥ ३८ ॥ तेसेसेहेजा
 नंदके ॥ संतकबुतरफाल ॥ लक्षवीनाउलटील

गे ॥ मंदीर मेहेल देवाल ॥ ३८ ॥ नौजोगी जडभ
 रथ सुष ॥ दत अजगर अवतार ॥ परम हंस ॥
 भव भई तल ॥ उनकी आघ अपार ॥ ३९ ॥ बीच
 रग येते ही जगत मे ॥ वीतरागा गस सेहेल क
 वते हुने रे हे वंन कीया ॥ दाम कटाई मेहेल ॥ ४०
 अंधी डनी यां वावरी ॥ लहत न छल बल छंद ॥
 ताते पडी भ्रम जाल मे ॥ सेहे जानंद के फंद ॥ ४
 १ ॥ कपटी भेष कुचा तक ॥ हाटक वत हर सांण
 दाम मीले देवी तल अछे ॥ चाषत षी वे प्रांण ॥ ४
 २ ॥ ल्यो सांमी के पक्ष मे ॥ चग चगी देष फसाय
 उपनी सद वेदांत नु ॥ ज्ञान प्रांण सोही जाय ॥
 ४३ ॥ मुंडीया सेहे जानंद का ॥ दिषी त मुडी त
 बाहार ॥ ज्यो पती मुवे श्री या मुडणी ॥ तजे न वर
 कर्म जार ॥ ४४ ॥ ते से मुडी त मुंडीया ॥ मुवे परी
 संसार ॥ परा अंतर था तो रचा ॥ नगर नगर
 घर बारा ॥ ४५ ॥ दाम तजे त्रीया न ही छी वे ॥ तो
 कुण कज म गंज जाल ॥ ते ही वीतराग के रे हे
 नकु ॥ वंन पंड वक्ष वी साल ॥ ४६ ॥ दाम तजे जोर
 त्रीया तजे ॥ तो कुण डर की ये मेहेल ॥ चाल्य का ही
 वीतराग की ॥ लो करी का वंन फेला ॥ ४७ ॥ नग
 र नगर भटकण करी ॥ घर घर बोध बताय ॥

॥ माहा

॥ ६६

सागरहीनेतसकर॥ धुतीधंत्यलेईजाय॥ ४८
उताडनीयांसुकहे॥ धीवेनांहंमधंनसंत॥ ४९
उवेनीजघरकुसवे॥ कोडीकोडीकरीतंत॥ ५०
॥ त्यागउनुकामतीगनो॥ एधुताउगराज
जौषेडुअंतयांजरेभरेसोअपनेकाज॥ ५१
गांडगांडसेमुडीया॥ करीएकगालोक॥ स
रधासेतीलेईचलो॥ अनवस्तरकेरोक॥ ५२
कुंडकरीजडजीवनो॥ लेईजावेधणीधांम॥
खंडलोकसमजेतही॥ उगतसकरनांकोम
५३॥ मंदीरमेहेलदेखायके॥ मनवेबडपर
तापाज्ञाननदेवेगंडुरा॥ पथरेपतेअबापा॥ ५
३॥ सांमीनाराण्यमंतरा॥ एहीजपावेजाय
आत्मलक्षणदेईसके॥ वथाकहेगयोपाप
५४॥ तीरछोटावेचरणमे॥ लेसवंनकाक
मीअवतुमहीतीरभेभया॥ धंत्यकरहोम
सधर्म॥ ५५॥ ज्योमातासुतमंदकी॥ दीउकर
लेतबलाई॥ एमुसकेमंतमोहनी॥ सुतके
दुषनजाई॥ ५६॥ त्योसेहेजानंदजंनके॥ पाप
लीयानवजाय॥ सुषकेहेरणकीमोजमे॥ व
र्याजकवहाय॥ ५७॥ दातार्थेनेमोसके॥ आ
पेसुकअमोन॥ जिसेराजाभांडके॥ देनीसुत

कुदांत ॥ ५८ ॥ प्रगटवेलपावईतगो ॥ सेहेजाने
 दकोपंथ ॥ बीनाज्ञानपुरसातंत ॥ हीजडसो
 मीओरुसंत ॥ ५९ ॥ करमधुडाईकारमां तां
 प्याजीवजंजाल ॥ बीनाआत्मलसप्रतुभव
 फोगटआलपंपाल ॥ ६० ॥ नासनछीवेपुर
 सकु ॥ पुरसनछीवेतासा ॥ उपरसेअलगा
 रहे ॥ पणअंतरवेहेवार ॥ ६१ ॥ गुतरहेवीवीचा
 रण ॥ ज्योतासुगत्यअरंद ॥ मोहनहीतीक्यो
 रये ॥ नंदीकनारीकेवुंदा ॥ ६२ ॥ बोहोतेप्रमेधी
 बोडकी ॥ भरेओरकाओर ॥ रंडीबाजछीना
 लवा ॥ हंडहरामीघोर ॥ ६३ ॥ बुंझानंदओरुसु
 गता ॥ एसवकेसीरदार ॥ ओरभेषकेनंद
 की ॥ आपेछेदछीनार ॥ ६४ ॥ बारपंथचोंसं
 पदा ॥ ओरुदरसनषडसुंड ॥ कुनेरंडीराषी
 मेहेलमे ॥ करीएषगकुंड ॥ ६५ ॥ केतेहीजुग
 बीतीगये ॥ तबकेषाषीभेष ॥ तरुणीवेतनां
 हीअबलगे ॥ धंस्यपुरातंतभेष ॥ ६६ ॥ ओरन
 उषवेअंतकु ॥ रहेनगरसेबाहार ॥ एघरक
 रीअवसेघुसे ॥ त्यागवगीवंगहार ॥ ६७ ॥ रो
 मानंदनीमानुजा ॥ बीसुसांममाध्वाचार ॥
 जेसीकहीतेसीचले ॥ अबलगीएकहीतार

माहा

॥१००

दत्त। ओरु उन से बंठे जेह। तीने कीया संसार
सोपंग त्यसे डुरकीये। एकतान ही अधीकार
६९। सुध भेष संकरतणो। वेद अंत की वात
ज्ञान जथा रथतावर। तिह अवलगी साक्षात
७०। माहामत ज्ञान कबीर का। पंडेह देव दे
वाला। वेद कते बन मान ही। अब तेह काते ही
चाल। ७१। तीन गुन गवरी सुत। तुलसी सा
लंग सेव। एते कुषंडीत करी। बंधो पस्य अभे
व। ७२। लोक के हे एसे नांडरे। षट दर संन उस्ता
द। आद्य अंत कही हकी गत। सब ते मता अ
घादा। ७३। जीत मे पर पंचनांक सु। ध्रुव ज
ज्ञान गंभीर। अब लगी संतन मान ही। जी जे
नदी कबीर। ७४। ओरु संत जेत न्ये भये। दा
दुनांत क आद्य। नीरालंब एसे चले। अब ह
नांही उपाद्य। ७५। नीगंम चतुर गत्यहार दास
दचीद आनंद कंद। लोका लोचले अब लग। फ
से नही नये कंद। ७६। ज्ञान मता ओरु कर म
क। पंथ पुरातन वेद। भीन भीन जीनु जे ही ल
ष। कही समजाये ह भेदा। ७७। ए सब धर्म धोरं
धर। अपनी अपनी ओर। सब से मग सांमी
तणो। नी षट ह शंमीषोर। ७८। एक धार स

बहीचले। उदेअस्तलौमीत। पीछेपावनबाव
 डे। सोसाचेरगाजीत। १४। सोमीसेहेजाने
 दको। एगमगीपंथभमेल। उलटपुलटबहु
 बेरकीया। ज्योप्यालीकायेला। १५। बंनसेइ
 यामंदीरकीया। तज्यधंत्यकीतासंच। नग
 रीजात्यौल्योकीया। नहीपरभुतारंच। १६।
 सीष्याकटाईओरुरषी। नंदेजेहीसबदेव
 स्वानभवेज्योउगला। ताईकरनलगेसेव
 १७। हुंगकरीधंतकारणे। उंभेधुत्योदेश। धर
 धरवेसबसुलीया। कुंनउषाडेकेश। १८। ज्यो
 बाजीगरयेलत। नरघटनारीयाय। जगरीजा
 यंनजालहे। कोउनवरजेताय। १९। तेसेही
 सेहेजानंदको। वेसवीलोकीलोक। दलरीके
 धंत्यदेतहे। पापनहीधुंत्यफोक। २०। पथंम
 पस्यउजागर। देषीतकठणकलीमांय। हेम
 जांनुषगवेलही। नटेनकटजमीजांय। २१।
 बंधेधामवैरागसे। गादीपुतवैराग। अस्तआ
 चारजताहीथे। रतंनतालज्योकाग। २२।
 सीघगहामहीसीयालीया। लोटतदेषेनेण
 वीतरागीआसनपर। लोआचारजगेण। २३।
 २४। बंधीयेजबुधीबले। लोकचल्यातेहीद्वार।

माहा

॥१०१

अंतरलक्षमंकारके। साचनएकलगारा।
सांमीसेहेजानंदके। पंथपक्षकेपोल। गुसधा
त्यकोहुकेपोलहे। प्रगटकीयातबषोल्म॥६०॥
यागल्यउनजननांलहे। सहेसोरमतहीघात
जो जनुनीवीवीचारणी। पुत्रकरतनहीबा
त॥६१॥ सांमीसेहेजानंदकु। जेहीसमरुत
नरनार। अंतकालजीवजावही। जंमद्वारेज
षमार॥६२॥ जगजनुनीसेंकोबडो। जेहीसंक
रअरधंग। आत्मलक्षवीनुभडी। एककमस
ततंनभंग॥६३॥ व्यासवीदुरसंमपंडीता।
नहीकोजुगपरजंत। आत्मलक्षवीनुकलपता
मिटीनारदमीलेसंत॥६४॥ कुंतासुतजमीजी
तके। कीयेयज्ञअसमेद। आत्मलक्षवीनुकु
लवीध। भयो नपापउछेद॥६५॥ धीताभीस्यस
रआसने। क्रससमीपकीयेज्ञान। गयोपाप
पंडावभये। सुषसाताअभीरान॥६६॥ धर्मदा
सगडबांडके। करतहीकरमअपार। ज्ञानवी
नाजडजजनसे। पायेनांतत्ववीचार॥६७॥ त
बतेहुनेकरुणाकर। मीलीगयेसंतकबीर।
अरुढगतीभईज्ञानसे। जबरुलेसुषसीर॥
६८॥ जंनषपीताजुगजाहर। तेडेहयज्ञअनेक

सरोनकारुजकरमीसे **बी**नुनीजज्ञानवीवे
 का **१०४** **मी**लेज्ञानीजवतेहनकु **अ**एवंक
 अवतार **रा**जकरतवंसुवीद्वीत **कर**त
 नलागीवार **१०५** **रा**जपरीक्षतकर्मसित
 भयेश्रापजीनुसोष **मी**लेज्ञानीसुषदेवज
 बी **दी**नससकीयेमोस **१०६** **के**तीकसाष्य
 देहुमम **क**हतनआवहीअंत **भ**येमुक्तजे
 हीजेहीजंन **ज्ञा**नयकीगतीवंत **१०७** **बी**
 नुज्ञाननीजकरसे **पा**पहोयकवभंग **क**
 रहीग्रहीघरआपसमे **कु**नईछतसतसंग
१०८ **स**तसंघत्यगतीपलटत **भ**मरकीट
 कीन्याय **कर**हीगवंनचीदगगंनमे **के**व
 लपदपरसाय **१०९** **आ**त्मलक्ष्मीराकरण
 पणवप्राणपत्यदेव **हो**तसुलभसतसंघस
 हस्तांमलततषेव **११०** **कर**मीवचनवीधुं
 सके **कर**हीभरंमसबभंग **नी**जानंदपद
 प्रणीयत **कर**वावहीसतसंग **१११** **जे**ही
 जेहीदेवजजतडुनी **त्री**गुणनीरंजंनआद्य
 ताहीतेपरंपरासामत **नी**जकेवलपदमा
 हाद् **११२** **ते**हीकरताकायंमकुल **जी**नु
 जीवअंशजाहंन **ता**हीलषेलसपयअषे **॥**

म

॥ माहा ॥ सतगुरुसंतमहांत ॥ १०८ ॥ सोही सतगुरुओ
 रुसंतको ॥ माहामतगतीअभंग ॥ ताहीसुसंत
 ॥ १०२ ॥ प्रीछप्रसयसी ॥ वाहीकहाबुहसतसंग ॥ १०९
 ओरुओरसासमागंसबे ॥ षटनवदशवी
 स्तार ॥ संसेनदहहीक्रमकटे ॥ कबुहनपाव
 हीपार ॥ ११० ॥ तिहसतसंगसबकहणाका ॥
 लहएतहीपदपरम ॥ मुक्तकहाचहोजीवकु
 उलटफसावहीभरम ॥ १११ ॥ सुखेहजीवकोह
 कल्पके ॥ धरीधरीअल्पकेअंग ॥ ताहीमुखाव
 नभमीमीले ॥ परपंचीसतसंग ॥ ११२ ॥ आद्यआ
 पनकीनवलहे ॥ जानतनहीकधुअंत ॥ तीन
 कुजेसीकोउकहे ॥ तिसेचलतमतंत ॥ ११३ ॥ सु
 धअनुभवतीजलशबीनु ॥ पगटेनहीदीमजां
 न ॥ बोधतजीवगुरुहसंतसे ॥ अंसुफसेहेवांत
 ११४ ॥ सीसकेसरूपचीनावही ॥ तिहीआयेहु
 सुदअंश ॥ बोहोरुउलटमीलतनगती ॥ उत्त
 तरहेतांसस ॥ ११५ ॥ सोहीदातासतगुरुसद
 कुलकेवलकेवेत ॥ आयेहुतंतुधरक्षीतीपर
 जगजीवंतकेहेत ॥ ११६ ॥ ओरसकलओरली
 केहे ॥ बुधकीवातबताय ॥ सोहीसतसंगत
 बादल ॥ मोहोयंसुनीसुताय ॥ ११७ ॥ आत्म

2043

लक्ष्मीनुसबे। कहावंनकेसतसंघ। ज्योना
 रीतरकीबनी। नचतपुरसकेसंग॥११५॥ क
 रतबीहारनउपलके। नीजरतनहीवीसीया
 र। आत्मलक्ष्मीनुअंतर। त्योगुरुसीसुअ
 धीकार॥११६॥ सबसारनगतीपक्षनकीबा
 रपारममजोय। आत्मलक्ष्मीनुअगमकी। ग
 तीलहतनहीकोय॥११७॥ षट्दरसनपंथदा
 दश। ओरुसाहास्रचोवेद। आद्यअंतकेमध
 मही ~~कुपीतकुचीतगंमभेद~~॥११८॥
 पणसेहेजानंदसांमीको। ब्रथापक्षउपदेशआ
 यअंतओरुमध्यमही। ज्ञाननहीलवलेश॥१
 १९॥ बीनुज्ञानआत्मलक्ष्मी। पंथपक्षपरबीत
 रूपवंतनरबदनके। पणपुरसातंतहीन॥१
 २०॥ तेहीआवतनहीकांमकु। कांमनीकंथ
 लगार॥ बेहेतंनतापनबुझही। कहनसीरभ
 रथार॥१२१॥ त्योसेहेजानंदसाथमे। पुरुसा
 तंननहीज्ञान। नारीरूपसतसंघकु। होय
 नहीमोक्षतीद्यांन॥१२२॥ नाटकदेवीनभुल
 ही। एपरपंचीकांम। सांमीसेहेजानंदकोती
 पटपंथनकांम॥१२३॥ नीपटकरमकेपंथमे।
 जीवमोक्षनहीपाय। तातेजगमेकहतहा। ६

[साह] लवजायबजाय ॥ १२७ ॥ ओहो जीव अत्र मत फं
 दहो ॥ सेहे जानंद सत संग ॥ अत्र रगत मती म
 ॥ १०३ ॥ लीतता ॥ उपली सेल सुचंग ॥ १२५ ॥ बाजा भी
 तर अमी कृत ॥ सेहे जानंद के चेहेन ॥ साच जुम
 सब दरसही ॥ अत्र भवतां मम वैत ॥ १२६ ॥ अ
 वदेषो नी जनै येन से ॥ सुरत नुरत धरी सार
 हंम की ना सोही बचंत परा ॥ जवी आवे पतीया
 रा ॥ १२७ ॥ यागत्य मत्य जां नी तजो ॥ सेहे जानंद
 को संग ॥ फांसु के से फसी मरो ॥ देष पती गी रं
 १२८ ॥ बरज बांधी के कहतुं ॥ सो गंत पाई सत
 वारा ॥ सेहे जानंद के यक्ष मे ॥ कोहन पावही पार
 १२९ ॥ जो चाहो कोहु मोक्ष कु ॥ तो तजहो एही फं
 द ॥ सरण ग्रहो बंल वेत को ॥ तुरत करही नीर बंध
 १३० ॥ डीग वजे जुग जाहर ॥ हंम केवल बंल वेत
 आवहु जीव सकल सोही ॥ कहतु मारे हेत ॥ १
 ३१ ॥ नीज करता केवल सदा ॥ मग अजरा यल द
 रा ॥ तेही पद तुरत लयावहु ॥ करी आत्म उपदेश
 १३२ ॥ जुगंत असंघते अवलगे ॥ बोहोरुहु कलप
 परजंत ॥ आत्म लखी तुमोक्ष ही ॥ कोहो कुंन
 पायेहु संत ॥ १३३ ॥ नीनुमानत जुगई सकर ॥ ह
 री के दश अवतार ॥ गुरुज्ञानी से पाईये ॥ तेहसा

त्मततसार॥१३७॥मछकेधातामांतही॥कोर
 मकेगुरुसेहेज॥मुनीअगस्तवैराहके॥सीघ
 नकेगुरुतेज॥१३८॥वांमनकेगुरुनभरुषी
 फरसरंमवछराज॥रंमचंडवसीएही॥डुवा
 साक्रससमाज॥१३९॥वांमरुषीगुरुबुधके
 याहीकलजुगमांकीन॥घोरसमयेअज्ञान
 से॥भागत्यागरहेभीन॥१४०॥अबकेछेवदध
 रनकु॥हरीनीकलंकभवतार॥सेहेजस्वरुप
 गुरुतासके॥करहीकलंकनीस्तार॥१४१॥द
 सअवतारंनकेगुरु॥हुतेसकलबुंलवेत॥ईस
 आग्यामेकौरहो॥बीनुनीजज्ञानसहेत॥१४
 २॥एहीदशगुरुबुंलवेतसे॥लीयेअवतारदश
 ज्ञान॥सकलभावभवमांरमे॥ईश्वररहोनी
 घांन॥१४३॥ज्ञानहीनसेनांतरे॥जोकहावही
 जुगनाथ॥कुलपनाउघडेलुहारसे॥ज्योकीली
 बीनुहाथ॥१४४॥कसवीभुतीअध्यायमे॥बुंन
 वकीयेजेहीरुप॥ज्ञानहीनसांमतीवत॥कुहुं
 तीनुभेदअनुप॥१४५॥नरपतीपसुपतीबुसप
 ती॥षडकआयुधपतीघार॥एतनेहुहरीआप
 संमकीये॥ओरकंचनदेवनास॥१४७॥एहीष
 टपतीरतीसांमत॥पणआतमलक्षहीन॥ए

॥साहा

॥१०४

तनेमेकोहमोक्षही॥कोहोकाहनकोकीन
१४८॥हरीकेदशप्रवतारसे॥कोसांमयजु
गसांय॥तीनुहुगुरुज्ञानीकीये॥साष्यपुरा
नकीसांहाय॥१४९॥ओरजीवनकीकोगने
ईश्वरगुरुआधीन॥पणचाहाईयेबुंलवेतही
काजनहोयउपचीन॥१५०॥अंतकहणकी
कहणएह॥ज्ञानवीनासबदंड॥सीसकेका
रजक्योंसरे॥जीतुआगुरुअंध॥१५१॥कोटी
कर्मकरावही॥सुषसंमत्यागपढाय॥ज्ञानही
नतेहीगुरुथकी॥सीसकोमोक्षनांथाय॥१५
२॥ज्ञानहीतपढेनीगमकु॥होयसाहास्रप
द्वेत॥मोक्षनहीजौंतापको॥जोबीतुबीजअं
नषेत॥१५३॥तेहुतेहंमसतकहतहु॥ज्ञानक
रमकरीभीन॥सांमीसेहेजानंदके॥यक्षआ
त्मलक्षहीन॥१५४॥कोत्यउपायकरोकेहु॥
तेहुतेमोक्षनहोय॥सांमीसेहेजानंदके॥फं
दपरोमतकोय॥१५५॥करमकरावेकारमां
देखंनओरलीआला॥तंनधंन्यहरवाकारणे
नांखेहुजीवजंजाल॥१५६॥धंनलोभेपरयंच
रची॥करहीजक्तउपदेश॥जीवकेकारजक
रनकु॥लक्षनहीलवलेश॥१५७॥साधतअ

पनेस्वारथ॥जेहीतेहीपेजबनाय॥दयाहीन
 भवभ्रमीतव॥जीवकीमेहेरनलाय॥१५८॥या
 येवेरजोंमरकटा॥भरीअपनेमुषगाल॥तुचा
 गबकरीभक्षन॥बीजगतजेहुबेहाल॥१५९
 ल्योंसेहेजानंदसामीकु॥बडीफलसंसार॥द
 वगबलेईषायके॥तजहीबीजगजीवसार॥
 १६०॥इहमध्येजीवजांहांरहे॥तेनकहीजीवजा
 ल्य॥हुंतोअंशकेवलतणो॥करीनदीयोसाक्षा
 त्॥१६१॥आद्यजीवजीनसेहवो॥तेहीघररहे
 अभेदा॥आयेहुईतकेईलक्षणसे॥आवंनकी
 योनभेदा॥१६२॥तबनहीजानतएहीकधुजी
 वतारननीजज्ञान॥आवंनजानकीगुंमन
 ही॥नीजघरठेठवेकांन॥१६३॥सतगुरुबीना
 कोहुमोक्षही॥पावतनहीजबीजेहा॥तातेस
 कलसबजांहांनकु॥कहतकुवेरसुण्यनेह
 १६४॥नेहकरीनीजनाथके॥ग्रहोगंमज्ञान
 चोवेर॥पासकरंननीजपतीपदा॥वायेहुसाहे
 बकुवेरा॥१६५॥काजनहोवततेहुंनसे॥ज्ञानही
 नगतीकंद॥तबजीवजांतसकलतजो॥सत
 संगसेहेजानेदा॥१६६॥जेहीकारनएहीआये
 हासेहेजानंदसामीता॥पठवायेहुजीनकीक

माहा

॥१०५

हं॥ सुनो सकल वीधी संत ॥ १६७ ॥ नीज करता
कैवलकुल ॥ तारुहिकं मुफरमांत ॥ हंमकुक्कहे
तुंमजांहांतमे ॥ जाईकरोतीजज्ञान ॥ १६८ ॥ जां
नतनहीकोउजक्रमे ॥ कैवलपदपरचंड ॥ पु
गटकरोतेहीअनुभव ॥ सप्तदीपनवषंड ॥ १६९ ॥
सुदेहमगजगजीवंतको ॥ ममचरननआवंत
पासडारकेबीचरहे ॥ मायाकालकमंत ॥ १
७० ॥ जबसेजगहंमसरजीया ॥ तबसेअबलगी
बेरा ॥ जीवदीयानहीआवंतकुं ॥ जबकेरोके
सेर ॥ १७१ ॥ घेरकीयाचरअचरल्यो ॥ श्रीगुणमा
डेकरकील ॥ बंध्येपासनीगमचुहं ॥ कालरहे
सीरभील ॥ १७२ ॥ एहीवीधीभवअटकायेह ॥
कालमायामीलीदोय ॥ उपजीमेहेसतेहीजी
वनपर ॥ हंमपरवावततोय ॥ १७३ ॥ हमेरेकि
येउतपंनजीव ॥ तेहीडुबतसंसार ॥ कालके
पासछोडायके ॥ लावुहसरनहंमार ॥ १७४ ॥
जेहीफेदेजुगफांसीया ॥ नीगमकरमगती
पेर ॥ हतंनकरोतेहीपासकु ॥ ज्ञानशब्दसम
सेर ॥ १७५ ॥ औरममजंजीरकु ॥ तोडाधरोभव
पार ॥ मुक्तकरोसबजीवंतकु ॥ कालरहोजव
मार ॥ १७६ ॥ एतनेबचनवीलोकके ॥ हंमसेकी

नकरतार॥ मेहेरवां नसेदी नहोये॥ लीनेसी
 रपरधार॥ १७७॥ नीजकरता उचारंन॥ प्रसी
 धयोहो लटहंकार॥ सुनीतकालतेही बचं
 नकुं॥ आयुहमंनभयंकार॥ १७८॥ तातघडी
 ततवेवमे॥ चेतैहकालचकंद॥ पठयेडुतअ
 ग्यादेई॥ जाईरचो जुगफंद॥ १७९॥ बेरबेरसम
 कायके॥ इतनसुकहीकाल॥ डंभरचोडनी
 यांमही॥ षलकदेषावेनष्याल॥ १८०॥ जेही
 तिहीसुकसजंतनसे॥ घेरकरही संस्वार॥ जे न
 नमानेतेहनका॥ जेहीपठवेकीरतार॥ १८
 १॥ तेहीडुतईतंतनधर॥ आयुहजेहीमम
 आग॥ जगजीवलीयेडेहेकायके॥ धरीके
 कपटवेराग॥ १८२॥ भेरकीयोभवसागर
 औरसेकरीअभाव॥ हंमआगतीनुआय
 के॥ साधीलीयोडुतदाव॥ १८३॥ बोहोरुबचं
 नहंमपतीनके॥ लीनेहुतेसीरधार॥ तेहीहु
 कंसपीछुतेअब॥ हंमआयेहअवतार॥ १८४
 जबीहंमआयेहुजांहांनमे॥ कहंनकरतापु
 दयोज्य॥ भोहादमोसमऊभूतनता॥ देवंन
 अंशपरोज॥ १८५॥ तबीहंमदेवेहुजांहांनमे
 इतभवकीयेवेफांम॥ अरचीभेसभवंजीत

॥साहा

सेहेजानंदजीनुनांम ॥१८६॥बीमुषकीयेव

हुजनंनकुं ॥हंमसेतीअंतराय ॥प्रसतेदेतेप

॥१०६

दपरमकु ॥पणनसकेकोईआय ॥१८७॥बंधे

जीवतेहीइतनसे ॥हुकंमकालकेकोप ॥अं

धेरषेहुअज्ञानसे ॥करीकेज्ञानकेलोप ॥१

८८॥जबीहंमकहतहुंजुगतकु ॥मतीउनसे

पतीयाव ॥अपनेपतीकुपोहोचावही ॥जो

कोउनपेजाव ॥१८९॥पतीउनकेजेहीकाल

ही ॥कीयेआगंमहंमसोय ॥देवहीसकलसु

षतेहनके ॥जेजंनउनकोहोय ॥१९०॥कोटीक

कलयओरुजुंगमही ॥पापकीयोजीनुहीय ॥

जुवकुहंतोसमएही ॥परोसकलसीरमोय ॥

१९१॥काजतुमारेकहतहुं ॥अहोजगकेजीव

चुरा ॥मांनतोकोपानहीमांनवी ॥दिरतवजायन

तुरा ॥१९२॥अबतेहीबचतवीलोकके ॥देषुहु

हुदयेवीचार ॥नीरषकरोनीजनयेनसे ॥ज

बीहंमसेपतीयार ॥१९३॥जोहंमसेपतीयाव

हु ॥तंनमंनसुकरहेत ॥दरसावुहुदीअज्ञान

कु ॥करहुतायततवेत ॥१९४॥कोटवहावुहुम

र्मके ॥तोहुहुसंचेसंच ॥मरमसुनावुहुमोसक

रहेनांरुसलरंच ॥१९५॥तंनकेतत्वलयावहं

भिनभिन्नकरभाव ॥ आत्मलक्ष्मीशक्रण ॥ स
 मकसतंतरसाव ॥ १९६ ॥ इंडीदेवअनुकरमी
 त ॥ अरमीतवीश्ववीलास ॥ निडरकरहुतेही
 क्रतनसे ॥ अनुभवज्ञानप्रकास ॥ १९७ ॥ आप
 अपनेसबअखल ॥ इंडीदेवअहंमेव ॥ फरक
 सदासुधचेतन ॥ तेहंत्येअकलअमेव ॥ १९८
 जेहीमेवनीजनरणवु ॥ परणवुपरमउद्योत
 जीनकुलागतनांकषु ॥ कालकरमकीछेत्त
 १९९ ॥ सोहीस्वरूपनीजअवनके ॥ कुलकर
 ताकेअंश ॥ बीनुजांनेजुगहोयरहो ॥ अहंगजी
 वआकंश ॥ २०० ॥ जोगतीहस्तांमलकरु ॥ स
 शीरमध्येजेहीशीव ॥ ओरकहंगत्यअगंमकी
 परमपुरातंनपीव ॥ २०१ ॥ जेहीघरकेजीवअं
 सही ॥ सोहीकैवलकरतार ॥ नीजनैननदर
 सावुहं ॥ तेहीघरतत्ववीचार ॥ २०२ ॥ जेहीमग
 सेजगआयेह ॥ कताअंसहोयजीव ॥ बोहोरु
 जावंनतीतलक्षकहं ॥ जेहीपदपरमसेदेव
 २०३ ॥ उतइतउभयेलक्षनकी ॥ देहसमऊअ
 आप ॥ आवंनजावंनकीगत्यतुंम ॥ जानहोआ
 पहीआप ॥ २०४ ॥ ओरलक्षउतकएक ॥ आवं
 ननीजकरतार ॥ जेहीजगमेजंनइछहो ॥ आ

माहा ॥ वही सरन हमारा ॥ २०५ ॥ बीनुप्या सपेहेतं नवी
 ना ॥ देह परमपदं न ॥ नीरभे करीव सावुहं ॥
 ॥ १०७ ॥ नीजघरनी श्रलनी घांन ॥ २०६ ॥ कुलं रता मम क
 पठयेह ॥ करन एही उपगारा ॥ तेहं ते सकल जी
 व आंनहो ॥ हंम सेतीपतीयारा ॥ २०७ ॥ अरुठ
 मतागत्य अगमकी ॥ नीगमलहतनही पार
 तिही पुरुष हंम आयेह ॥ अहो जीवका जनुमा
 रा ॥ २०८ ॥ बंलावी सुमाहेश्वरा ॥ ईश्वर सहीत
 प्रजंत ॥ ममगती अगंम अघादहे ॥ तेहं ते अ
 कल अनंत ॥ २०९ ॥ जगजीवतारं नकारणे
 आयेह हंमतनुधारा ॥ नीजकरता प्रमांतगी
 कहन कुंकांहांन मोकारा ॥ २१० ॥ अष्टरची जा
 ही जवंनके ॥ तवनके सब संसारा ॥ त्रीगुण
 जात्य जीव अटकीया ॥ भूत्येहु नीजकरतार
 २११ ॥ तिही करतानी जघुदनकी ॥ षो जवल
 ककी मांहांया ॥ लायेह हंम तेही जीवंनकु ॥ दे
 हु सकल बतारा ॥ २१२ ॥ पणजेही जीव सरन
 मम ॥ आवहीतंन मंनधारा ॥ बीनुह सरमती
 नुसलपमे ॥ सिहेज करुह भवपारा ॥ २१३ ॥ एही भ
 वभो म्यके भूमीये ॥ डगडग सुघडसहांन ॥ आ
 घुअंत मध्यहकीगत ॥ हंम सेक घुन अयांन

२१४॥ ओरुजीवअंशसामान्यही॥ सुरनर
 कीदृष्टजंत॥ हंमपदपुरसवीसेसही॥ कुल
 करताकेतंत॥ २१५॥ तेहृत्येसकलसबजान
 हो॥ आद्यअंतमध्यसोय॥ ओरजीवनकी
 हंमलहं॥ ममगतीलहेनकोय॥ २१६॥ त्रीगु
 णसक्तजुगईसनकी॥ लहेहनीगंमगतीने
 त॥ पणनवजांनीसकतको३॥ हमेरीआद्य
 नेअंत॥ २१७॥ आद्यअंतहमेरीकषु॥ कोहल
 हुतनहीपार॥ विश्वसकसकेसाक्षीके॥ हंम
 साक्षीकीरतार॥ २१८॥ चौदतवकचरअचर
 लो॥ वृत्तजीवअभीरांत॥ तीनकेसाक्षीई
 श्वर॥ गावतवेदपुराण॥ २१९॥ सोहीईश्वर
 स्वरवीश्वनके॥ पणवप्राणसोहंग॥ सकल
 तंतचैतंतनतन॥ विश्वसाक्षीकेअंग॥ २२०॥ ओ
 रनीगंमतीजवदीतव॥ परमेश्वरगुणग्रांम
 सोहीपरतेहीमिसोस्वरहरी॥ एहीपरमेश्व
 रनांम॥ २२१॥ जबीसबकेस्वरईश्वर॥ देवो
 नीगमपतीपाद॥ विश्वसाक्षीपदसोहीस
 दाचीदचैतंतनतनमाहाद॥ २२२॥ तिहीचीदनी
 ध्यवीद्यबुंलही॥ केवलसुरकेभास॥ भासअं
 सईश्वरस्वर॥ विश्वसाक्षीसोईस्वास॥ २२३॥

माहा । तेही स्वासजपयुगवके । कबजरवंतकीरता
॥१०८॥ कुंभकमोरकतयंतायही । नाथकस्वरूप
हंमार ॥ २२४ ॥ यागसहंमईश्वरपुरा । वीश्वसा
ह्यीसीरईसा । श्रोतासरलममोक्षहं । मोनहो
वीशावीश ॥ २२५ ॥ तेहीस्वरूपहंमअवीगत
गतीलहतनहीकोय । अपरंमपारपरमपर
जबीकहतममसोय ॥ २२६ ॥ याहीसमऊस
दचीनहो ॥ परमपुरसगतीमोय ॥ ग्रहेहस
रनजेहीजीवमम । तायअमुक्तनहोय ॥ २२
७ ॥ तेहतेसकलजीवषाडहो ॥ पंथज्ञानहीन
साथ । करनकाजकुलषलकेके । हंमआये
हुनीजनाथ ॥ २२८ ॥ नाथसकरतंननयरहे
नासागरस्वरनाथ । ताईनीश्वलदृढकरनन
नाथनथननीजनाथ ॥ २२९ ॥ तेहीनीजना
थअहंगमम । मतीजांतहोस्वरनाथ ॥ जाप
रकरुणादरसुह ॥ पावुनबुध्यकीबाथ ॥ २३० ॥
अवनीरचीजीनुअबलगे ॥ रहेहअकलजे
हीरुप । षलकथालकेषेलकी ॥ तेहीहंमतत्व
अनुप ॥ २३१ ॥ तत्वअनुपतेहीतंनधरा । करं
नधरंनपरकाज । कहंनषचीसपुदभोवंत
सिभेजेहुनीजमाहारज ॥ २३२ ॥ जेहीअसीथी

ये प्रायेह करतुहकंमतेहीजोर। नहीतोआ
 गेहेकरनकुं। कुनपरोजनमोर। २३३। क
 रमीपंथकयीतुगमही। ज्ञानहीनमतीमं
 दा। रचवेगेनीजस्वारथ। पडौहुजीवतेहीफं
 दा। २३४। सांमीसेहेजानंदकी। प्रायेउंनस
 सभेष। ज्ञानहीनतेहीपषसबे। वीश्वग
 नकेवेष। २३५। राचेसबतुगतेहंनमे। देव
 करमकीकए। अंतरकपटनजानही। श्री
 तुआत्मलक्ष्यदृष्ट। २३६। आगेजीवअंधेहते
 ओरमीलेगरुअंध। तेहीअंधवसवीश्वही।
 होयरहेसकलसबंध। २३७। तेहीबंधनमु
 क्तावंन। वहावंननीजघरसेर। कारनधरन
 सधारिहु। सांमथसाहेबकुवेर। २३८। योज्यष
 लककीलहनकु। अतमेकहनअघादासा
 रअसारनवेरन। करंनकुवेरतनुमाद। २
 ३९। माहादतनुगत्यजानके। जेहीजिनहोय
 हमार। तायकरहुगतीमाहादही। केहंकुवे
 रपोकार। २४०। अष्टादशषटनीगमल्यौ।
 देषहुवचनवीलोक। कोहनकहीहंमसार
 श्री। देईकरमसीरगोक। २४१। उचरेस।
 कलआचार। इरतनीगंमकीओल। के

॥साहा॥

॥१०६॥

वलपदपरचंडकी॥पुगटकहीनकोहुषोल
२४२॥एसेकौहुंकौकहीसके॥सामथवचं
नप्रगाज॥बीनुजांतेनीजपदजबी॥ओरसे
वकेसकाज॥२४३॥तेहीसबवचनसकाज
के॥सीरसुक्रीतममेवन॥मदंनमानपषक्र
तनके॥तीरषदेशीनीजनैन॥२४४॥जोम
मशब्दसकलसीर॥ताडनकरनतगाज॥तेसे
हीपरमपुरसहंम॥अवीगतगंमगतीरज
२४५॥तबजीवहोयनीसंषधुड॥ममपदकर
हुसतेश॥पठवुपरमपददेहीनीज॥अगंम
इसमउपदेश॥२४६॥परमहेतजनजुगतके
परमअर्थतनुमेर॥बोहोरुपरमलक्षकह
तही॥करुणासीधुकुवेर॥२४७॥एहीउप
गारकरननीज॥जांनीअरुढगतीमोय॥आ
वुहंसरतनसकलजन॥क्रतामीलंनजीव
होय॥२४८॥जुगजाहरषसीधपद॥सदची
दप्रानंदकंद॥तीनकीपरकेवलनीज॥नी
गमनयेतीनीरबंध॥२४९॥चौदतवकजीतु
सीरपर॥ओरुचौदउपघाड॥मध्यमेहेलेकेव
लकुल॥सुगंमसभोम्यसघाड॥२५०॥तेही
केवलषुदषावंत॥अषीलजीवंनकरतार

केहंकुवेरदरसावुहं॥जोजंतहोयहंमार॥२५१॥
 दोहा॥माहामणीगंथगुढारथ॥नारथनरमु
 नीवारा॥सारअसारनीराक्रण॥समऊसते
 तरसारा॥२५२॥परमगुरुपदपरसीधुता॥प
 रममोक्षदीनदेव॥साहेबकुवेरपतीनायक
 हस्तामलतदसेवा॥२५३॥संवत्१९०४॥जावैशा
 कसुद्यसुकल्पस्य॥दीनदशमीसुकरसेली
 षीतकीयेसुभदस्य॥३॥इतीश्रीमाहामणी
 गंथसंपूर्णः॥॥संवत्१९२६॥नामाहा
 सुदी१०॥नेगुरुवारसंपूर्णः॥॥समाप्तः॥
 लीखक॥श्रीवैष्णव॥अंबर्ददासवलवदास
 गंमः॥ऊंमरेवमांवाघनाथमाहादेवप्रागळ
 ज्ञानीलेवापाटीदार॥सर्वसंतोनेवैष्णोनेस
 तकैवलनमस्कारछेवांचुनोः॥संपूर्णः॥॥